पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान

–विजयकुमार, गुढ़गाबा

इस नश्वर जगत में इंसान पंचभौतिक शरीर की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए देवी देवताओं का सहारा लेता है। कुछ क्षणों का सांसारिक सुख जिसका अन्त दुःख पर ही होता है पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के वास्तविक सुख से वंचित कर देता है। चौदह लोक को चलाने के लिये विष्णु भगवान जिनको सब राम भगवान कोई त्रिलोकी नाथ कहते हैं, देवी भागवत में स्पष्ट लिखते हैं मुझ पर माया की इतनी गहरी छाप पड़ी है कि मैं उस पूर्ण ब्रह्म परमात्मा का ध्यान ही नहीं कर पाता। मुझे जिस प्रकार हुक्म दिया जाता है उसी प्रकार कार्य करने में अग्रसर हो जाता हूँ। रामायण में भी लंका काण्ड में राम जी ने कहा 'कहाँ लग कहूँ मैं नाम बड़ाई, राम न सके नाम गुण गाई।' गीता में कृष्ण (विष्णु) ने कहा, क्षर और अक्षर से ऊपर उत्तम पुरुष ही परमात्मा है। दुनियाँ वालों के सब संशय स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने हरिद्वार में जाकर निवारण किए। स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने सब धर्माचार्यों को कहा कि अगर परमात्मा कण कण में समाया है तो नरक और स्वर्ग में कोई फर्क नहीं ये वेद शास्त्रों की फिर जरूरत नहीं थी। उन्होंने इस चौदह लोकों को मिलाकर क्षर पुरुष जो नाशवान है इससे ऊपर अक्षर पुरुष और उससे ऊपर एक अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान कराई। नानक जी ने भी बाणी में कहा क्षर थे परे, अक्षर थे पारा, वाही पुरुष का करौ विचारा। स्वामी जी ने कहा एक Community को belong करने वाला पूर्ण ब्रह्म परमात्मा नहीं। हरिद्वार में सब धर्माचार्यों ने पूछा तुम किसकी पूजा करते हो, स्वामी जी ने उन्हीं के ग्रन्थों में दिखाया ब्रह्म मुनि 'युगल स्वरूपम् विमलानन्दम' युगल स्वरूप की पूजा करते हैं। ब्रह्म विद्या हमारी देवी है दुःख सुख में हमारा पूजन इसी का ही है। सतगुरु कोई शारीरिक व्यक्ति नहीं सतगुरु ब्रह्मानन्द हैं। ब्रह्म मुनियों की पूजा आत्मिक पूजा है।

आत्मा का सम्बन्ध सिर्फ पूर्ण ब्रह्म

(शेष पृष्ठ १९ पर)

Nijanand App

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्यादपुनर्भव दर्शनम् ॥

अर्थात् 'हे कृष्ण ! हमारे जीवन पथ में सदा पग-पग पर विपत्तियाँ आती रहें, क्योंकि विपत्तियों में निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते हैं और आपके दर्शन मात्र से ही 'अपुनर्भव' अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।'

महाराज शिवि ने भी अपने जीवन काल में दुःख की ही कामना की थी—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम् ।
कामये दुख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशम् ॥

'इस विशाल ब्रह्माण्ड में जितने भी आर्त्त हैं, दुखी हैं उन सबको सुख की प्राप्ति हो, मेरा भले ही स्वर्ग जाय, मोक्ष जाय, मैं यही कामना करता हूँ।' किन्तु वास्तव में ऐसी कामना करने वाले का मोक्ष जायेगा नहीं क्योंकि वे तो महानात्मा हैं जो दूसरों के दुख को मिटा कर स्वयं दुख वरण करना चाहते हैं। जितने भी व्यक्ति इस संसार में 'दुःख की चाह' करते हैं उनकी इस 'चाह' के पीछे मुख्य भावना मोक्ष की निहित रहती है। क्योंकि दुःख आने पर ही निजानन्द की प्राप्ति सम्भव है।

इस प्रकार से दुःख सुख के रहस्य को समझ लेने पर यह सांसारिक वैभव छल कपट युक्त प्रतीत होने लगता है। अन्ततोगत्वा हम यह कहने में समर्थ हैं कि यदि हमें अपने प्राणप्रिय प्रियतम श्रीकृष्ण की प्राप्ति करना चाहते हैं तो हमें इस नश्वर जगत में प्राप्त होने वाले दुःखों से घबराना नहीं चाहिये अपितु श्रीराज जी के चरण कमलों का ध्यान करना चाहिए और साथ ही दूसरी बात दुख से न घबराने की यह भी है कि—

दुख से पिउ जी मिलसी,
सुखै न मिलिया कोय।
अपने धनी का मिलना,
तो दुखै से होय ॥

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

परमात्मा से ही है इसलिए स्वामी जी ने सबके धर्मचियों और कुम्भ में आए सब साथियों के सब संशय निवारण किए। इसके बाद सबने एक पूर्ण ब्रह्म की पहचान करके विजयाभिनन्दन बुद्ध निष्कलंक का ही ध्वज हरिद्वार में लहराया। इसलिए हम किसी देवी देवता का सहारा न लेकर सिर्फ वाणी-राजजी महाराज का सहारा व पूर्ण विश्वास लेकर ही जीवन व्यतीत करें।

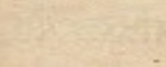

Nijanand App